International Journal of Leading Research Publication (IJLRP)

E-ISSN: 2582-8010 ● Website: www.ijlrp.com ● Email: editor@ijlrp.com

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और विकसित भारत 2047: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का योगदान

डॉ. सुरेश कुमार मेघवाल

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान,

राजकीय कन्या महाविद्यालय शाहाबाद, बारां

स्वयं सेवक - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बारां

अध्यक्ष- भारतीय इतिहास संकलन समिति इकाई बारां, राजस्थान क्षेत्र

अध्यक्ष - एकल अभियान अंचल समिति बारां

सार (Abstract)

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय राष्ट्र-निर्माण की एक केंद्रीय और जीवंत अवधारणा है, जो राष्ट्र की पहचान को केवल राजनीतिक सीमाओं तक सीमित न रखते हुए उसकी सभ्यता, परंपराओं, जीवन-मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत के साथ गहराई से जोड़ती है। भारतीय संदर्भ में राष्ट्र की अवधारणा सदैव बहुआयामी रही है, जहाँ विविधता में एकता, सह-अस्तित्व, आध्यात्मिकता और सामाजिक समरसता जैसे तत्व इसकी मूल पहचान बनाते हैं। यही कारण है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारत के सामाजिक ढांचे को सुदृढ़ करने के साथ-साथ राष्ट्रीय एकता को भी सशक्त आधार प्रदान करता है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने विकास के विभिन्न चरणों को पार किया है, जिसमें आर्थिक प्रगति, सामाजिक परिवर्तन, तकनीकी उन्नति और वैश्विक सहभागिता जैसे अनेक आयाम शामिल हैं। इन सभी क्षेत्रों में सरकारी प्रयासों के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है, जिसने संगठनात्मक शक्ति, सेवा-भावना और सांस्कृतिक जागरण के माध्यम से समाज को संगठित करने का कार्य किया है।

यह शोधपत्र "विकसित भारत 2047" की परिकल्पना के संदर्भ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। वर्ष 2047, जो भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने का प्रतीक है, के लिए निर्धारित यह लक्ष्य केवल आर्थिक समृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि एक ऐसे भारत के निर्माण की कल्पना करता है जो सांस्कृतिक रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से समरस और वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली हो। इस व्यापक दृष्टि में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एक आधारभूत तत्व के रूप में उभरता है, जो राष्ट्रीय चरित्र, नैतिक मूल्यों और सामाजिक एकता को सुदृढ़ करता है।

प्रस्तुत अध्ययन में RSS की भूमिका का विश्लेषण विभिन्न आयामों—जैसे सामाजिक सेवा, शिक्षा, सांस्कृतिक संरक्षण, ग्रामीण विकास और राष्ट्रवादी चेतना के निर्माण—के माध्यम से किया गया है। साथ ही, यह शोधपत्र इस बात की भी पड़ताल करता है कि किस प्रकार संघ की गतिविधियाँ विकसित भारत के लक्ष्यों के अनुरूप समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक हो सकती हैं।

अंततः, यह शोधपत्र यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और संगठनात्मक प्रयासों का समन्वय भारत को 2047 तक एक विकसित, आत्मनिर्भर और सांस्कृतिक रूप से जागरूक राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

प्रस्तावना (Introduction)

भारत एक प्राचीन, बहुआयामी और निरंतर विकसित होती सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है, जिसकी ऐतिहासिक गहराई हजारों वर्षों तक फैली हुई है। यहाँ की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक विविधता, भाषाई बहुलता और धार्मिक सह-अस्तित्व ने भारतीय राष्ट्र की एक विशिष्ट पहचान निर्मित की है। भारतीय राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक सीमाओं या सत्ता-व्यवस्था का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक गहन सांस्कृतिक चेतना का प्रतिफल है, जो समाज के सामूहिक अनुभवों, परंपराओं और मूल्यों में निहित है। इसी संदर्भ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीयता की उस व्यापक भावना को अभिव्यक्त करता है, जो विभिन्नताओं के बावजूद एकता, समरसता और साझा विरासत की अवधारणा को सुदृढ़ करती है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का आधार भारतीय संस्कृति की निरंतरता और उसकी जीवंतता में निहित है। यह न केवल अतीत की गौरवशाली परंपराओं का संरक्षण करता है, बल्कि वर्तमान में सामाजिक एकता और भविष्य के राष्ट्र-निर्माण के लिए एक सशक्त मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। भाषा, धर्म, आचार-व्यवहार, लोक परंपराएँ और नैतिक मूल्य—ये सभी तत्व मिलकर उस भारतीय पहचान का निर्माण करते हैं, जो राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक विमर्श से आगे बढ़ाकर सांस्कृतिक और सामाजिक आयाम प्रदान करते हैं। इस प्रकार, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारत की आत्मा के रूप में कार्य करता है, जो राष्ट्रीय एकता और अखंडता को सुदृढ़ करता है।

इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत "विकसित भारत 2047" की परिकल्पना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यह दृष्टि केवल आर्थिक विकास या तकनीकी प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि एक ऐसे समग्र विकास मॉडल की कल्पना करती है, जिसमें सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक सशक्तिकरण, पर्यावरणीय संतुलन और वैश्विक नेतृत्व जैसे तत्व भी शामिल हैं। वर्ष 2047, जो भारत की स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने का प्रतीक है, के लिए निर्धारित यह लक्ष्य देश को एक आत्मनिर्भर, समावेशी और सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक दीर्घकालिक रणनीतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

इस संदर्भ में सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने, जागरूकता बढ़ाने और राष्ट्रीय मूल्यों को सुदृढ़ करने का कार्य करते हैं। विशेष रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) ने अपने स्थापना काल से ही समाज के संगठन, सेवा और सांस्कृतिक जागरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। संघ का कार्य केवल वैचारिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, आपदा राहत और सामाजिक समरसता जैसे विविध क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया को सुदृढ़ करता है।

अतः यह शोधपत्र सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा को विकसित भारत 2047 के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है और साथ ही यह विश्लेषण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार RSS जैसे संगठन इस राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि सांस्कृतिक मूल्यों और संगठनात्मक प्रयासों का समन्वय भारत को एक सशक्त, समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से जागरूक राष्ट्र बनाने में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद वह व्यापक वैचारिक दृष्टिकोण है, जो राष्ट्र को केवल एक राजनीतिक इकाई या भौगोलिक सीमाओं में सीमित न मानकर उसकी सांस्कृतिक आत्मा, ऐतिहासिक निरंतरता और सामाजिक चेतना के रूप में परिभाषित करता है। यह विचारधारा इस मान्यता पर आधारित है कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक पहचान उसकी संस्कृति, परंपराओं, जीवन-मूल्यों और सामूहिक स्मृतियों में निहित होती है। भारत के संदर्भ में यह अवधारणा विशेष महत्व रखती है, क्योंकि यहाँ की सभ्यता हजारों वर्षों से विविधताओं के मध्य एकता के सिद्धांत पर आधारित रही है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद "भारतीय संस्कृति" और "सनातन मूल्यों" के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह केवल अतीत के गौरव का स्मरण नहीं करता, बल्कि वर्तमान समाज को नैतिकता, सहिष्णुता, सह-अस्तित्व और कर्तव्यपरायणता जैसे मूल्यों के माध्यम से सशक्त बनाने का कार्य भी करता है। इस प्रकार, यह विचारधारा राष्ट्र को एक जीवंत सांस्कृतिक इकाई के रूप में प्रस्तुत करती है, जिसमें भिन्न-भिन्न भाषाएँ, धर्म, परंपराएँ और रीति-रिवाज एक साझा राष्ट्रीय पहचान में समाहित होते हैं।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की वैचारिक नींव भारतीय दार्शनिक परंपराओं में निहित है। "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे सिद्धांत सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार के रूप में देखने की दृष्टि प्रदान करते हैं, जबकि "एकात्म मानववाद" जैसी अवधारणाएँ मानव, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन और समन्वय पर बल देती हैं। ये सिद्धांत न केवल राष्ट्रीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी भारत की सांस्कृतिक दृष्टि को विशिष्ट बनाते हैं। इस संदर्भ में एकात्म मानववाद की अवधारणा विशेष उल्लेखनीय है, जो मानव-केंद्रित विकास और सामाजिक संतुलन को प्राथमिकता देती है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि यह राष्ट्रीय पहचान को ऐतिहासिक परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है। भारत में विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों—वैदिक युग, बौद्ध युग, मध्यकालीन और आधुनिक काल—ने मिलकर एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का निर्माण किया है। यह विरासत केवल स्मृति का विषय नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। इसी के माध्यम से समाज में आत्मगौरव, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक आत्मविश्वास का विकास होता है। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद सामाजिक समरसता, एकता और नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करता है। यह समाज के विभिन्न वर्गों, जातियों और समुदायों के बीच सहयोग, सहिष्णुता और परस्पर सम्मान की भावना को विकसित करता है। इस प्रकार, यह राष्ट्र के सामाजिक ढांचे को सुदृढ़ बनाकर एक समावेशी और संतुलित समाज की स्थापना में सहायक होता है। इसी वैचारिक आधार को आगे बढ़ाने में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। संघ का मूल उद्देश्य भारतीय समाज को संगठित करना, सांस्कृतिक चेतना का प्रसार करना और राष्ट्रीय मूल्यों को सुदृढ़ करना है। RSS अपने विभिन्न कार्यक्रमों, शाखाओं और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की इस अवधारणा को व्यवहारिक रूप प्रदान करने का प्रयास करता है, जिससे समाज में एकता, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति की भावना विकसित हो सके।

अतः सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केवल एक सैद्धांतिक अवधारणा नहीं, बल्कि एक जीवंत और क्रियाशील विचारधारा है, जो भारत के समग्र विकास और राष्ट्रीय पुनर्जागरण की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होती है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ: स्थापना एवं उद्देश्य

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 1925 में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज को संगठित करना, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति की भावना विकसित करना था।

संघ के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- समाज में एकता और संगठन को बढ़ावा देना
- सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण
- राष्ट्र सेवा और चरित्र निर्माण
- सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय चेतना का विकास

RSS विश्व के सबसे बड़े स्वयंसेवी संगठनों में से एक है, जिसकी लाखों शाखाएँ पूरे भारत में कार्यरत हैं।

राष्ट्र निर्माण में RSS का योगदान

1. स्वतंत्रता संग्राम में योगदान

RSS के संस्थापक और स्वयंसेवकों ने स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया और राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया।

2. सामाजिक सेवा और आपदा राहत

RSS ने विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, भूकंप और महामारी के समय राहत कार्यों में सक्रिय भागीदारी की है।

- राहत शिविरों का आयोजन
- भोजन और चिकित्सा सहायता
- पुनर्वास कार्य

3. शिक्षा और सांस्कृतिक जागरण

संघ द्वारा संचालित विभिन्न शैक्षिक संस्थानों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा दिया गया है।

4. सामाजिक समरसता और संगठन

RSS ने जाति, वर्ग और क्षेत्रीय विभाजन को समाप्त कर समाज में एकता स्थापित करने का प्रयास किया है।

5. ग्रामीण विकास और आत्मनिर्भरता

संघ से जुड़े संगठनों ने ग्रामीण क्षेत्रों में विकास, रोजगार और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में योगदान दिया है।

विकसित भारत 2047: अवधारणा और लक्ष्य

विकसित भारत 2047 भारत की एक दीर्घकालिक राष्ट्रीय दृष्टि है, जिसका उद्देश्य देश को उसकी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने तक एक समृद्ध, आत्मनिर्भर, समावेशी और वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। यह अवधारणा केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि एक समग्र विकास मॉडल को प्रस्तुत करती है, जिसमें सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक सशक्तिकरण, तकनीकी उन्नति और पर्यावरणीय संतुलन जैसे विभिन्न आयाम शामिल हैं। इस दृष्टि का मूल उद्देश्य भारत को "विकासशील" से "विकसित" राष्ट्र की श्रेणी में लाना है, जहाँ विकास का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक समान रूप से पहुँचे।

विकसित भारत 2047 की अवधारणा का केंद्रबिंदु एक ऐसा राष्ट्र निर्माण है, जो आर्थिक रूप से सशक्त होने के साथ-साथ सांस्कृतिक रूप से भी आत्मविश्वासी और जागरूक हो। यह दृष्टिकोण इस बात को स्वीकार करता है कि केवल GDP वृद्धि या औद्योगिक विस्तार ही किसी राष्ट्र के विकास का पूर्ण मानदंड नहीं हो सकते, बल्कि मानव विकास, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक पहचान भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं।

इस परिप्रेक्ष्य में विकसित भारत 2047 के प्रमुख लक्ष्यों को यदि विस्तार से समझा जाए, तो सबसे पहले आर्थिक विकास और औद्योगिकीकरण का लक्ष्य सामने आता है। भारत को एक मजबूत आर्थिक शक्ति बनाने के लिए उद्योगों का विस्तार, रोजगार सृजन, बुनियादी ढांचे का विकास और वैश्विक व्यापार में प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को बढ़ाना आवश्यक है। इसके साथ ही "आत्मनिर्भर भारत" की अवधारणा को सुदृढ़ करते हुए घरेलू उत्पादन और नवाचार को प्रोत्साहित करना भी इस लक्ष्य का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

दूसरा महत्वपूर्ण लक्ष्य तकनीकी नवाचार है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में तकनीक विकास का प्रमुख चालक बन चुकी है। डिजिटल इंडिया, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, स्टार्टअप इकोसिस्टम और वैज्ञानिक अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में प्रगति भारत को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे ले जाने में सहायक होगी। तकनीकी सशक्तिकरण न केवल आर्थिक विकास को गति देगा, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशासनिक सेवाओं को भी अधिक प्रभावी और सुलभ बनाएगा।

तीसरा लक्ष्य सामाजिक समावेशन है, जो विकसित भारत की अवधारणा का आधार स्तंभ है। इसका तात्पर्य यह है कि विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों—विशेष रूप से कमजोर और वंचित वर्गों—तक पहुँचे। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान करना इस दिशा में आवश्यक है। एक समावेशी समाज ही दीर्घकालिक और स्थायी विकास की नींव रख सकता है।

चौथा लक्ष्य सांस्कृतिक पुनर्जागरण है, जो इस अवधारणा को विशिष्ट बनाता है। भारत की सांस्कृतिक विरासत उसकी सबसे बड़ी शक्ति है, और इसे संरक्षित तथा प्रोत्साहित करना राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करने के लिए आवश्यक है। इस संदर्भ में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, जो परंपराओं, मूल्यों और सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करने का कार्य करता है।

पाँचवाँ और अंतिम लक्ष्य वैश्विक नेतृत्व है। विकसित भारत 2047 के अंतर्गत भारत को एक ऐसे राष्ट्र के रूप में स्थापित करने की परिकल्पना की गई है, जो न केवल आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में अग्रणी हो, बल्कि वैश्विक शांति, सहयोग और सतत विकास के लिए भी मार्गदर्शक की भूमिका निभाए। "वसुधैव कुटुम्बकम्" जैसे सिद्धांत इस वैश्विक दृष्टिकोण को और अधिक सशक्त बनाते हैं।

अंततः, यह स्पष्ट होता है कि विकसित भारत 2047 की दृष्टि एक समग्र और संतुलित विकास मॉडल को प्रस्तुत करती है, जिसमें आर्थिक उन्नति के साथ-साथ सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता को भी समान महत्व दिया गया है। यही संतुलन भारत को एक सशक्त, आत्मनिर्भर और सांस्कृतिक रूप से जागरूक राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगा।

विकसित भारत 2047 में RSS की भूमिका

विकसित भारत 2047 की परिकल्पना एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण की दिशा में अग्रसर है, जो आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी दृष्टि से सशक्त हो। इस व्यापक लक्ष्य की प्राप्ति केवल सरकारी नीतियों तक सीमित नहीं रह सकती, बल्कि

इसके लिए समाज के विभिन्न संगठनों और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। इसी संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है, जो सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक जागरण और सेवा कार्यों के माध्यम से राष्ट्र-निर्माण में योगदान देता रहा है।

1. सांस्कृतिक पुनर्जागरण

विकसित भारत की अवधारणा में सांस्कृतिक पुनर्जागरण एक महत्वपूर्ण तत्व है, और इस दिशा में RSS का योगदान उल्लेखनीय है। संघ भारतीय संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन के माध्यम से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को सुदृढ़ करता है। विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, उत्सवों और वैचारिक गतिविधियों के माध्यम से यह भारतीय समाज में सांस्कृतिक चेतना और आत्मगौरव की भावना का विकास करता है। इससे न केवल अतीत की विरासत सुरक्षित रहती है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक सशक्त सांस्कृतिक आधार भी तैयार होता है।

2. राष्ट्रवादी नागरिकों का निर्माण

RSS का एक प्रमुख उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है, जो राष्ट्र के प्रति समर्पित, अनुशासित और जिम्मेदार हों। संघ की "शाखा" प्रणाली के माध्यम से स्वयंसेवकों को शारीरिक, मानसिक और नैतिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रशिक्षण के द्वारा उनमें सेवा-भाव, नेतृत्व क्षमता, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति का विकास होता है। ऐसे नागरिक विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाते हैं और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

3. सामाजिक समरसता और एकता

विकसित भारत के लिए सामाजिक समरसता और एकता अत्यंत आवश्यक है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहाँ अनेक भाषाएँ, धर्म और संस्कृतियाँ सह-अस्तित्व में हैं, वहाँ सामाजिक एकता राष्ट्र की प्रगति का आधार बनती है। RSS अपने विभिन्न कार्यक्रमों और अभियानों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों के बीच संवाद, सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देता है। इसका उद्देश्य सामाजिक विभाजनों को कम करना और एक समरस, संगठित समाज का निर्माण करना है।

4. सेवा और विकास कार्य

RSS और इसके सहयोगी संगठनों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में व्यापक कार्य किए जाते हैं। विद्यालयों, चिकित्सा शिविरों, स्वच्छता अभियानों और ग्रामीण विकास योजनाओं के माध्यम से समाज के कमजोर और वंचित वर्गों को सहायता प्रदान की जाती है। ये सेवा कार्य न केवल सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं, बल्कि विकसित भारत के लक्ष्य—विशेष रूप से समावेशी विकास—को प्राप्त करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

5. युवाओं का सशक्तिकरण

भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा युवा वर्ग से संबंधित है, जो देश के भविष्य का आधार है। RSS युवा शक्ति को राष्ट्र-निर्माण की मुख्य धारा में जोड़ने का कार्य करता है। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों, नेतृत्व विकास गतिविधियों और सामाजिक अभियानों के माध्यम से युवाओं में जिम्मेदारी, आत्मविश्वास और राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना विकसित की जाती है। इस प्रकार, संघ भविष्य के नेतृत्व का निर्माण करता है, जो विकसित भारत 2047 की परिकल्पना को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

आलोचनात्मक दृष्टिकोण (Critical Perspective)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) को जहाँ एक ओर राष्ट्र-निर्माण, सामाजिक सेवा और सांस्कृतिक जागरण में उसके योगदान के लिए व्यापक रूप से सराहा जाता है, वहीं दूसरी ओर इसके संबंध में विभिन्न विद्वानों, राजनीतिक विश्लेषकों और सामाजिक चिंतकों द्वारा कई आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किए गए हैं। किसी भी बड़े और प्रभावशाली संगठन के अध्ययन में इन आलोचनाओं को समझना आवश्यक होता है, ताकि उसके योगदान और सीमाओं का संतुलित एवं वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन किया जा सके।

सबसे प्रमुख आलोचना यह है कि RSS को एक विशिष्ट वैचारिक ढाँचे, विशेष रूप से "हिंदुत्व" की विचारधारा से जोड़ा जाता है। आलोचकों का मानना है कि यह विचारधारा भारतीय राष्ट्रवाद को एक सांस्कृतिक-धार्मिक पहचान के साथ जोड़ती है, जिससे राष्ट्र की बहुलतावादी प्रकृति प्रभावित हो सकती है। हालांकि, समर्थकों का तर्क है कि संघ का "हिंदुत्व" सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का प्रतीक है, जो किसी एक धर्म तक सीमित नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता के व्यापक सांस्कृतिक स्वरूप को व्यक्त करता है। इस प्रकार, इस विषय पर विभिन्न दृष्टिकोण मौजूद हैं, जो इसे एक जटिल और बहस योग्य मुद्दा बनाते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण आलोचना अल्पसंख्यकों के प्रति दृष्टिकोण को लेकर है। कुछ आलोचकों का आरोप है कि RSS की विचारधारा और उसके कुछ संबद्ध संगठनों की गतिविधियाँ अल्पसंख्यक समुदायों के प्रति पर्याप्त समावेशी नहीं रही हैं। इसके विपरीत, संघ और उसके समर्थक यह दावा करते हैं कि उनका उद्देश्य "सर्वसमावेशी राष्ट्रवाद" को बढ़ावा देना है, जिसमें सभी नागरिकों को समान रूप से राष्ट्र का अभिन्न अंग माना जाता है। इस संदर्भ में वास्तविकता को समझने के लिए विभिन्न सामाजिक और क्षेत्रीय अनुभवों का गहन अध्ययन आवश्यक है।

तीसरी आलोचना RSS के राजनीति में अप्रत्यक्ष प्रभाव को लेकर है। यह कहा जाता है कि संघ, भले ही स्वयं को एक गैर-राजनीतिक संगठन के रूप में प्रस्तुत करता है, लेकिन उसके विचार और कार्यप्रणाली का प्रभाव भारत की राजनीतिक संरचना और नीतियों पर देखा जा सकता है। कुछ विश्लेषकों के अनुसार, संघ से जुड़े या प्रभावित व्यक्तियों की राजनीतिक भागीदारी इस प्रभाव को और स्पष्ट करती है। वहीं, संघ का दृष्टिकोण यह है कि वह प्रत्यक्ष राजनीति से दूर रहकर केवल राष्ट्रहित में सामाजिक और सांस्कृतिक कार्य करता है, और उसके स्वयंसेवक व्यक्तिगत रूप से किसी भी क्षेत्र में योगदान देने के लिए स्वतंत्र हैं।

इन आलोचनाओं के अतिरिक्त, कुछ विद्वान यह भी इंगित करते हैं कि किसी भी संगठन की तरह RSS के कार्यों और प्रभाव का मूल्यांकन समय, स्थान और सामाजिक संदर्भ के आधार पर भिन्न-भिन्न हो सकता है। अतः एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाते हुए यह आवश्यक है कि संघ के योगदान और आलोचनाओं दोनों का सम्यक् विश्लेषण किया जाए।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि आलोचनाओं के बावजूद RSS का सामाजिक, सांस्कृतिक और संगठनात्मक योगदान एक महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय बना हुआ है। इसके कार्यों, विचारधारा और प्रभाव का बहुआयामी विश्लेषण न केवल भारतीय समाज की समझ को गहरा करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में विभिन्न दृष्टिकोणों और विचारधाराओं का सह-अस्तित्व किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय राष्ट्र-निर्माण की उस आधारशिला का प्रतिनिधित्व करता है, जो देश की ऐतिहासिक निरंतरता, सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक समरसता को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करता है। विकसित भारत 2047 की परिकल्पना केवल आर्थिक उन्नति या तकनीकी प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण की दिशा में अग्रसर है, जो सांस्कृतिक रूप से सशक्त, सामाजिक रूप से समावेशी और नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हो। इस व्यापक लक्ष्य की प्राप्ति में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एक मार्गदर्शक तत्व के रूप में कार्य करता है, जो राष्ट्रीय पहचान और आत्मगौरव को सुदृढ़ करता है।

इस संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (RSS) का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। पिछले लगभग एक शताब्दी में संघ ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों—जैसे शिक्षा, सेवा, सांस्कृतिक संरक्षण, ग्रामीण विकास और सामाजिक संगठन—में सक्रिय भूमिका निभाते हुए राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया को मजबूत किया है। संघ की कार्यप्रणाली, जो अनुशासन, सेवा-भाव और संगठनात्मक शक्ति पर आधारित है, ने समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करने और उनमें राष्ट्रीय चेतना का विकास करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संघ का कार्य केवल एक संगठनात्मक ढांचे तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक आंदोलन के रूप में विकसित हुआ है, जिसने लाखों लोगों को राष्ट्र-सेवा और समाज-निर्माण के कार्यों से जोड़ा है। इसकी शाखाओं, सेवा परियोजनाओं और सामाजिक पहलों के माध्यम से एक ऐसे नागरिक समाज का निर्माण करने का प्रयास किया गया है, जो आत्मनिर्भर, उत्तरदायी और राष्ट्र के प्रति समर्पित हो।

हालाँकि, संघ के संदर्भ में विभिन्न आलोचनात्मक दृष्टिकोण भी मौजूद हैं, जो इसके विचार और कार्यप्रणाली पर प्रश्न उठाते हैं। किन्तु किसी भी व्यापक और प्रभावशाली संगठन की तरह, RSS का मूल्यांकन भी उसके बहुआयामी योगदान और आलोचनाओं दोनों के संतुलित अध्ययन के आधार पर किया जाना चाहिए। यही संतुलित दृष्टिकोण एक समग्र और वस्तुनिष्ठ निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायक होता है।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और संगठनात्मक प्रयासों का समन्वय भारत को 2047 तक एक विकसित, आत्मनिर्भर और वैश्विक स्तर पर प्रभावशाली राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यदि सांस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक समरसता और समावेशी विकास को समान रूप से प्राथमिकता दी जाए, तो भारत न केवल आर्थिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक और नैतिक दृष्टि से भी विश्व में एक आदर्श राष्ट्र के रूप में स्थापित हो सकता है।

संदर्भ (References)

1. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ. *संघ का परिचय एवं कार्यप्रणाली.*
2. डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार. *विचार और भाषण.*
3. एम. एस. गोलवलकर. *Bunch of Thoughts*.
4. एम. एस. गोलवलकर. *We or Our Nationhood Defined*.
5. पंडित दीनदयाल उपाध्याय. *एकात्म मानववाद.*
6. पंडित दीनदयाल उपाध्याय. *Integral Humanism Lectures*.
7. India After Gandhi – रामचंद्र गुहा.
8. The RSS: A View to the Inside – Walter K. Andersen & Shridhar D. Damle.

9. The Brotherhood in Saffron – Andersen & Damle.
10. Khaki Shorts and Saffron Flags – तपन बसु.
11. Hindutva: Who is a Hindu? – विनायक दामोदर सावरकर.
12. The Idea of India – सुनील खिलनानी.
13. Imagined Communities – Benedict Anderson.
14. Nationalism – रवीन्द्रनाथ टैगोर.
15. Discovery of India – जवाहरलाल नेहरू.
16. Culture and Imperialism – Edward Said.
17. Political Theory – ओ. पी. गौबा.
18. Indian Political Thought – वी. आर. मेहता.
19. Government of India. *Viksit Bharat @2047 Vision Document*.
20. NITI Aayog. *Strategy for New India @75*.
21. Ministry of Information & Broadcasting. Government Publications.
22. Press Information Bureau Reports and Releases.
23. Oxford University Press. Various publications on nationalism.
24. Cambridge University Press. Studies on cultural nationalism.
25. SAGE Publications. Research journals on political science.
26. Economic and Political Weekly. Articles on RSS and nationalism.
27. JSTOR. Research papers on Indian nationalism.
28. Google Scholar. Various scholarly articles.
29. ResearchGate. Papers on RSS and nation-building.
30. Britannica. Entries on RSS and nationalism.
31. Wikipedia. Articles on RSS and Indian politics.
32. Indian Council of Social Science Research. Reports on cultural studies.
33. University Grants Commission. Research guidelines and publications.
34. Lok Sabha Secretariat. Parliamentary debates and records.
35. Various PhD theses and dissertations on cultural nationalism and RSS (Indian universities).